महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा

की पीएच.डी. (हिंदी) की उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रबंध की संक्षिप्त रूपरेखा

सत्यं शिवं सुन्दरम्

शोध-विषय

"राष्ट्रीय कविता का भाषागत अध्ययन: माखनलाल चतुर्वेदी तथा रामधारी सिंह दिनकर के विशेष संदर्भ में"

शोध-निर्देशक

डॉ. अनीता शुक्ल

असिस्टेंट प्रोफेसर,
हिंदी विभाग, कला संकाय
महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय,
बड़ौदा

शोधार्थी

सुमन कुमारी

हिन्दी विभाग,कला संकाय,
महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय,
बड़ौदा

REGISTRATION NO. FOA/1451 **DATE: 26-09-2017**

जुलाई-2022

“राष्ट्रीय कविता का भाषागत अध्ययन:
माखनलाल चतुर्वेदी तथा रामधारी सिंह दिनकर के विशेष संदर्भ में”

शोध विषय की प्रेरक भावभूमि विषय चयन

किसी भी व्यक्ति का राष्ट्र के प्रति प्रेम व सम्पूर्ण समर्पण राष्ट्र के लिए गौरव का विषय होता है तो वहाँ निवासरत नागरिकों के लिए अनुकरण का भी विषय होता है । मेरे शोध विषय का बीजांकुरण मेरे मन में बचपन से मेरे पिताजी के विचारों से हुआ क्योंकि वे अपने विद्यार्थी जीवन में राष्ट्रीय कैडेट कोर के कैडेट रह चुके थे इसलिए उनके अंदर राष्ट्र के प्रति कर्तव्यपरायणता व उतरदायित्वपूर्ण प्रेम था जो मुझे प्रभावित करता रहता था। इसी प्रभाव के चलते मैंने स्नातक के अध्ययन के दौरान राष्ट्रीय कैडेट कोर (NCC) में प्रवेश लिया जहाँ से मेरे अंदर राष्ट्र के प्रति और अधिक कर्तव्यबोध एवं जागृति की भावना का उदय हुआ और यह कर्तव्यबोध व जागृति की भावना तब और अधिक दृढ़ होती गयी, जब मैं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित हिन्दी नेट जे. आर. एफ. परीक्षा की तैयारी के दौरान राष्ट्रीय काव्यधारा का अध्ययन कर रही थी। तब मेरा ध्यान राष्ट्रीय कविताओं की ओर आकर्षित हुआ। उसमें भी ‘एक भारतीय आत्मा’ के नाम से प्रसिद्ध ‘माखनलाल चतुर्वेदी’ एवं ‘राष्ट्रकवि’ के रूप में विख्यात ‘रामधारी सिंह दिनकर’ की कविताओं ने विशेष रूप से प्रभावित किया। यही प्रभाव मेरे शोध विषय की भावभूमि तैयार करता है और इसी प्रभाव के चलते मैंने माखनलाल चतुर्वेदी व रामधारी सिंह दिनकर की राष्ट्रीय कविताओं की काव्यभाषा को शोध विषय के रूप में चुना।

शोध विषय की सीमारेखा

हिन्दी साहित्य में कई विचारों व प्रकृति को लेकर काव्य का सृजन हुआ है। साहित्य की दृष्टि से मेरे शोध विषय की सीमारेखा माखनलाल चतुर्वेदी व रामधारी सिंह दिनकर बनते हैं तो व्यक्तिगत स्तर पर माखनलाल चतुर्वेदी और दिनकर की राष्ट्रीय कविताओं की काव्यभाषा बनती है। मैंने इनकी राष्ट्रीय चेतना से संबंधित कविताओं को ही लिया है तथा काव्य के सम्पूर्ण शिल्प को न लेकर मैंने केवल काव्यभाषा पर विशेष अध्ययन करने का निश्चय किया। उसमें भी इन दोनों कवियों की कविताओं की भाषा में शब्द शक्ति, काव्य-गुण, शब्द समूह, मुहावरे एवं लोकोक्तियों को ही लिया है। यही मेरे शोध विषय की सीमा रेखा व शोध विषय का विस्तार है।

शोध प्रबंध की रूपरेखा

प्रथम अध्याय:- राष्ट्र, राष्ट्रीयता एवं काव्यभाषा का स्वरूप एवं उपादान

(क) राष्ट्र एवं राष्ट्रीयता

1 राष्ट्र शब्द की व्युत्पत्ति

2 राष्ट्रीयता

3 राष्ट्रीयता के पोषक तत्त्व

4 राष्ट्रीयता का विकास

- -विश्व में राष्ट्रीयता का विकास
- -भारत में राष्ट्रीयता का विकास
- -हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीयता का विकास

(ख) काव्यभाषा का स्वरूप एवं उपादान

1 काव्य

2 भाषा

3 काव्यभाषा का स्वरूप

4 काव्यभाषा के भेद- 1.शास्त्रीय काव्यभाषा 2. राष्ट्रीय काव्यभाषा

(ग) शास्त्रीय काव्यभाषा

1 काव्यभाषा के तत्त्व

2 काव्यभाषा के हेतु

3 काव्यभाषा के प्रयोजन

4 काव्यभाषा के लक्षण

5 काव्यभाषा के गुण

6 काव्यभाषा के दोष

7 रस

8 छंद

9 अलंकार

10 ध्वनि सिद्धांत

-शब्द-शक्ति

(घ) राष्ट्रीय काव्य की भाषा

(च) कवि का व्यक्तित्त्व और भाषा का संबंध

द्वितीय अध्याय:- माखनलाल चतुर्वेदी तथा रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में युगीन परिस्थितियाँ एवं राष्ट्रीय स्वर

(क) युगीन परिस्थितियाँ

1 राजनीतिक परिस्थिति

2 सामाजिक परिस्थिति

3 आर्थिक परिस्थिति

(ख) राष्ट्रीय काव्य और राष्ट्रीय कवि

1 माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में राष्ट्रीय स्वर

2 रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय स्वर

तृतीय अध्याय:- माखनलाल चतुर्वेदी का व्यक्तित्व एवं कृतित्त्व

(क) व्यक्तित्त्व

1 जन्म

2 पारिवारिक जीवन

3 बाल्यकाल एवं विद्यार्थी जीवन

4 स्वतंत्रता संघर्ष में योगदान

5 व्यवसाय

6 सम्मान

7 समग्र व्यक्तित्त्व का मूल्यांकन

(ख) कृतित्त्व

1 काव्य रचनायें

2 गद्य रचनायें

3 निबंध

4 संस्मरण

5 कहानी

6 सम्पादन

चतुर्थ अध्याय:- रामधारी सिंह दिनकर का व्यक्तित्व एवं कृतित्त्व

(क) व्यक्तित्त्व

1 जन्म

2 पारिवारिक जीवन

3 बाल्यकाल एवं विद्यार्थी जीवन

4 स्वतंत्रता संघर्ष में योगदान

5 व्यवसाय

6 सम्मान

7 समग्र व्यक्तित्त्व का मूल्यांकन

(ख) कृतित्त्व

1 काव्य रचनायें

2 गद्य रचनायें

पंचम अध्याय:- माखनलाल चतुर्वेदी तथा रामधारी सिंह दिनकर की राष्ट्रीय कविताओं की भाषा

(क) भाषा का स्वरूप

1 भाषा

2 कविता की भाषा

(ख) शब्द-शक्ति

(ग) चित्रात्मकता

(घ) ध्वन्यात्मकता

(च) कल्पनात्मकता

(छ) भावात्मकता

(ज) काव्य-गुण

(झ) शब्द-समूह

(ट) मुहावरे और लोकोक्तियाँ

(ठ) कवि का व्यक्तित्त्व और उनकी भाषा

- **उपसंहार**
- **संदर्भ-ग्रंथ सूची**

➢ **शोध प्रबंध में विषय-वस्तु का विवरण**

अध्ययन की सुविधा एवं विषय की स्पष्टता की दृष्टि से मैंने सम्पूर्ण शोध प्रबंध को पाँच अध्यायों में विभक्त किया है। अध्यायों का संक्षिप्त शोध सार इस प्रकार से है-

प्रथम अध्याय:- राष्ट्र, राष्ट्रीयता एवं काव्यभाषा का स्वरूप एवं उपादान

प्रथम अध्याय को मैंने दो भागों में विभक्त किया है। जिसके प्रथम भाग में मैंने राष्ट्र एवं राष्ट्रीयता के विषय में लिखा है। जहाँ राष्ट्र शब्द की व्युत्पत्ति के विषय में भारतीय एवं पाश्चात्य विद्‌वानों के मत को स्पष्ट करते हुये उनके द्‌वारा दी गई परिभाषाओं को लिखा है। भारतीय वाङ्गमय में 'राष्ट्र' शब्द का प्रयोग वैदिक काल से ही होता आ रहा है। राष्ट्र एक समुच्चय है, कुलक है और राष्ट्रीयता एक विशिष्ट भावना। जिस जनसमुदाय में एकता की एक सहज लहर हो, उसे राष्ट्र कहते हैं। साहित्य का मनुष्य से शाश्वत संबंध है। साहित्य सामुदायिक भावना राष्ट्रीय चेतना का अङ्ग है। इस क्रम में मैंने राष्ट्र के पोषक तत्त्वों-भौगोलिक एकता, भाषिक एकता, ऐतिहासिक-सांस्कृतिक एकता, धर्म की एकता, आर्थिक हितों की एकता, जातीय एकता, राजनैतिक एकता इत्यादि का महत्त्व बताते हुए उसकी व्याख्या की है। तत्पश्चात मैंने विश्व में, भारत में तथा हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीयता के इतिहास को दिखाया है। हिन्दी साहित्य के अंतर्गत मैंने राष्ट्रीयता के विकास को विभिन्न कालों जैसे आदिकाल से लेकर वर्तमान काल तक की राष्ट्रीयता के विकास के विषय में लिखा है।

इसी अध्याय के दूसरे भाग में मैंने काव्यभाषा के स्वरूप तथा उसके उपादान को लिया है। जिसमें मैंने काव्यभाषा के स्वरूप के अंतर्गत भाषा एवं काव्य (कविता या पद्‌य) की चर्चा की है उसके बाद मैंने काव्यभाषा के दो भेद किये हैं- प्रथम शास्त्रीय काव्यभाषा एवं द्‌वितीय राष्ट्रीय काव्यभाषा।

काव्यभाषा के शास्त्रीय स्वरूप में मैंने काव्य के तत्त्व, हेतु, प्रयोजन, लक्षण, गुण, दोष, रस, अलंकार, छंद, ध्वनि-सिद्धांत, शब्द-शक्ति इत्यादि बिंदुओं पर प्रकाश डालते हुए राष्ट्रीय कविता की भाषा के विषय में लिखा है। राष्ट्रीय कविता का स्वरूप राष्ट्र के रूप पर ही आधारित होता है। राष्ट्रीय काव्य में समग्र राष्ट्र की चेतना प्रस्फुटित होती है। राष्ट्रीय भावना राष्ट्र की प्रगति का मंत्र है। राष्ट्रीय चेतना को झकझोरने वाला काव्य जनमानस को आंदोलित कर नैतिक मूल्यों को स्थापित करने का साहस भरता है। उन मूल्यों को महत्त्व देने के लिए प्रेरित करता है जिनमें हिंसा, घृणा को नकारकर एक उन्मुक्त वातावरण तैयार किया जा सके और जिसमें सभी धर्म निश्चिंत होकर साँस ले सकें और राष्ट्र अपने विकास के चहुमुखी मार्ग पर प्रशस्त हो । यदि प्रत्येक राष्ट्रधर्मी काव्य अपने समाज के अंदर ऐसा व्यापक उदात्त भाव और रचनात्मक संस्कार उत्पन्न कर सके, तो निश्चय ही ऐसा काव्य मानव कल्याण के लिए होगा अर्थात राष्ट्रीय काव्य मानवतावादी काव्य ही है। अंत में मैंने कवि के व्यक्तित्त्व का उसकी भाषा के साथ संबंध का विवेचन करते हुए अध्याय को पूर्ण किया है।

द्वितीय अध्याय:- माखनलाल चतुर्वेदी तथा रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में युगीन परिस्थितियाँ एवं राष्ट्रीय स्वर

द्वितीय अध्याय में माखनलाल चतुर्वेदी तथा रामधारी सिंह दिनकर की युगीन परिस्थितियों का वर्णन करते हुए राष्ट्रीय काव्य और राष्ट्रीय कवि के विषय में लिखा है। तत्कालीन युगीन परिस्थितियों को देखते हुए दोनों कवियों द्वारा रचित राष्ट्रीय स्वर से संबंधित कविताएं प्रस्तुत की हैं।

तृतीय अध्याय:- माखनलाल चतुर्वेदी का व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व

तृतीय अध्याय में मैंने माखनलाल चतुर्वेदी के सम्पूर्ण जीवन उनके जन्म से लेकर उनकी साहित्यिक यात्रा इन सभी को उजागर करने का पूर्ण

प्रयत्न किया है। इस अध्याय को भी मैंने दो खंडों में विभाजित किया है। प्रथम में मैंने माखनलाल चतुर्वेदी जी के जन्म और पारिवारिक जीवन का परिचय देते हुए उनके बाल्यकाल की शरारतों, नटखटपन आदि प्रवृतियों, शिक्षा-दीक्षा के संबंध में लिखा है। तत्पश्चात माखनलाल चतुर्वेदी का स्वतंत्रता संघर्ष में योगदान, व्यवसाय तथा भारत सरकार द्वारा मिले सम्मानों और पुरस्कारों इत्यादि की चर्चा करते हुए अंत में मैंने माखनलाल चतुर्वेदी के समग्र व्यक्तित्त्व का मूल्यांकन किया है।

इसके अतिरिक्त द्वितीय खंड में मैंने माखनलाल चतुर्वेदी के साहित्य सृजन की प्रवृति पर विशद रूप से प्रकाश डाला है और कवि के समग्र कृतित्व पर चर्चा की है, जिसमें गद्य, पद्य, निबंध, भाषण, संस्मरण, नाटक, कहानी, सम्पादन को भी शामिल किया है।

चतुर्थ अध्याय:- रामधारी सिंह दिनकर का व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व

चतुर्थ अध्याय में रामधारी सिंह दिनकर के सम्पूर्ण जीवन तथा उनकी साहित्यिक यात्रा का विस्तार से विवेचन किया है। इस अध्याय को भी मैंने तृतीय अध्याय की भांति दो खंडों में विभाजित किया है। प्रथम में मैंने रामधारी सिंह दिनकर के जन्म और पारिवारिक जीवन का परिचय देते हुए उनके बालपन प्रवृतियों एवं विद्यार्थी जीवन, शिक्षा-दीक्षा आदि के संबंध में लिखा है। तत्पश्चात रामधारी सिंह दिनकर का स्वतंत्रता संघर्ष में योगदान, व्यवसाय तथा भारत सरकार द्वारा मिले सम्मानों और पुरस्कारों पर भी चर्चा की है। व्यक्तित्त्व के अंत में मैंने रामधारी सिंह दिनकर के समग्र व्यक्तित्त्व का मूल्यांकन किया है।

इसके अतिरिक्त द्वितीय खंड में मैंने रामधारी सिंह दिनकर के साहित्य सृजन की प्रवृति पर प्रकाश डाला है। दूसरे खंड में कवि के समग्र कृतित्त्व पर चर्चा की है, जिसमें कवि की काव्य रचनाओं और गद्य रचनाओं के बारे में लिखा है।

पंचम अध्याय :- माखनलाल चतुर्वेदी तथा रामधारी सिंह दिनकर की राष्ट्रीय कविताओं की भाषा

साहित्य की किसी भी विधा में शिल्प का महत्वपूर्ण स्थान है चाहे वह कविता, कहानी, नाटक, निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण, आत्मकथा, जीवनी, रिपोर्ताज, यात्रा-साहित्य कुछ भी क्यों न हो। साहित्य में शिल्प ही वह माध्यम है जो उसे नियोजित करता है। साहित्य सदैव शिल्प से बंधा हुआ होता है एवं शिल्प साहित्य से।

भाषा शैली के अंतर्गत माखनलाल चतुर्वेदी और रामधारी सिंह दिनकर की कविताओं में प्रयुक्त भाषा, शब्द-शक्ति, चित्रात्मकता, ध्वन्यात्मकता, कल्पनात्मकता, भावात्मकता, काव्य-गुण, शब्द-समूह, मुहावरे और लोकोक्तियाँ आदि की चर्चा करते हुए दोनों कवियों के व्यक्तित्त्व का उनकी भाषा के साथ संबंध के बारे में लिखा है।

इस शोध कार्य के प्रत्येक अध्याय का अपना वैशिष्ट्य एवं महत्त्व है। शोध कार्य की संपूर्णता व पूर्णता उसकी उपादेयता में ही सन्निहित होती है। इस बात को ध्यान में रखकर मैंने अपने शोध विषय के प्रत्येक पक्ष को गहराई के साथ विवेचित करने की कोशिश की है।

उपसंहार- गागर में सागर भरने की कहावत उपसंहार के विषय में पूर्णरूप से चरितार्थ होती है क्योंकि उपसंहार किसी विस्तृत विषय को बहुत ही संक्षिप्त रूप से कहने की प्रक्रिया है। उपसंहार किसी भी विषय का सार होता है। उपसंहार स्वरूप मैंने “राष्ट्रीय कविता का भाषागत अध्ययन: माखनलाल चतुर्वेदी तथा रामधारी सिंह दिनकर के विशेष संदर्भ में” में किये गए शोधकार्य के सार एवं उसके महत्त्व को प्रस्तुत किया है।

परिशिष्ट- परिशिष्ट के अंतर्गत मैंने अनुक्रमणिका प्रस्तुत की है। जिसमें आधार ग्रंथ, सहायक ग्रंथ, कोश ग्रंथ, पत्र-पत्रिकाओं एवं वेबसाइट का विवरण दिया है। जिनका उपयोग मैंने अपने शोध कार्य के लिए किया है।

भवदीय

सुमन कुमारी